SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 4

औद्योगीकरण का युग

भाग - 3

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

उपनिवेशों में औद्योगीकरण

- भारत पर नज़र डालने से पता लगता है कि एक उपनिवेश का औद्योगीकरण कैसे होता है।
- हम गैर-मशीनी क्षेत्र के साथ-साथ कारखाना उद्योग को देखेंगे।
- हमारा अध्ययन मुख्य रूप से कपड़ा उद्योग तक ही सीमित रहेगा।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

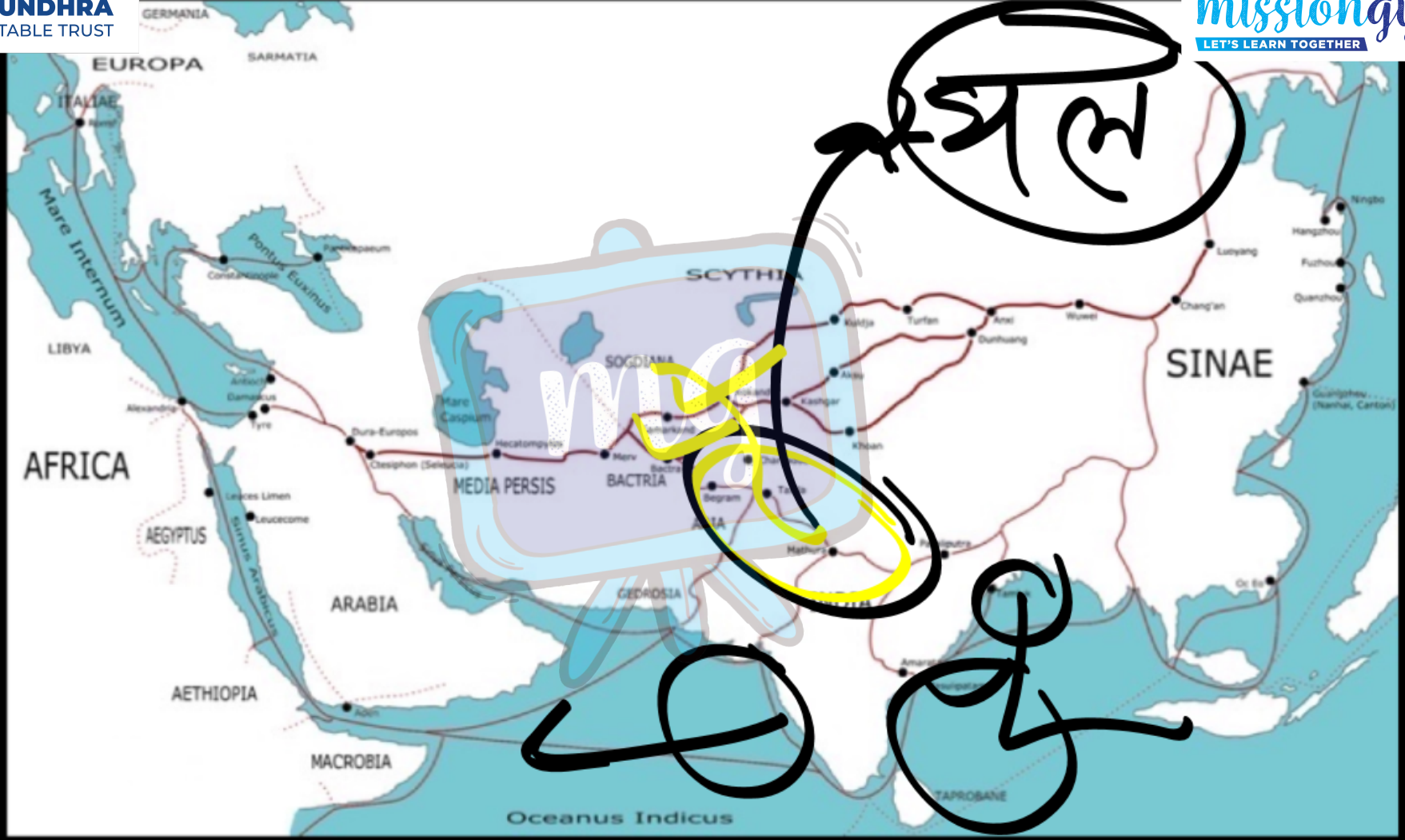

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionगyan
LET'S LEARN TOGETHER

बंदरगाह

↓

आर्थिक केन्द्र

- यहाँ के बने महीन कपड़ों के थान ऊँटों की पीठ पर लाद कर पश्चिमोत्तर सीमा से पहाड़ी दर्रों और रेगिस्तानों के पार करते हुए ले जाए जाते थे।

जल मार्ग से व्यापार :-

- यहां के बंदरगाहों से फलता-फूलता समुद्री व्यापार चलता था।
- गुजरात के तट पर स्थित सूरत बंदरगाह के ज़रिए भारत खाड़ी और लाल सागर के बंदरगाहों से जुड़ा हुआ था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionगyan
LET'S LEARN TOGETHER

व्यापारी
बैंकर
पैसे

- दूसरी तरफ पूर्व में कोरोमंडल तट पर मछलीपटनम और बंगाल में हुगली के माध्यम से भी दक्षिण-पूर्वी एशियाई बंदरगाहो के साथ खूब व्यापार चलता था।

व्यापारी तथा सौदागर :-

- इस निर्यात व्यापार में बहुत सारे भारतीय व्यापारी और बैंकर सक्रिय थे।
- वे उत्पादन में पैसा लगाते थे,
- चीज़ों को लेकर आते थे
- और निर्यातकों को पहुँचाते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

- ये माल भेजने वाले आपूर्ति सौदागरों के जरिये बंदरगाहों, नगरों तथा देशों के भीतरी इलाकों से जुड़े हुए थे।
- ये सौदागर बुनकरों को पेशगी देते थे, फिर बुनकरों से तैयार कपड़ा खरीदते थे और उसे बंदरगाहों तक पहुँचाते थे।
- बंदरगाहों पर निर्यात-व्यापारियों के दलाल मोल-भाव करके आपूर्ति सौदागरों से माल खरीद लेते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

- 1790 के दशक तक भारतीय सौदागरों वाला यह नेटवर्क टूटने लगा था।



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

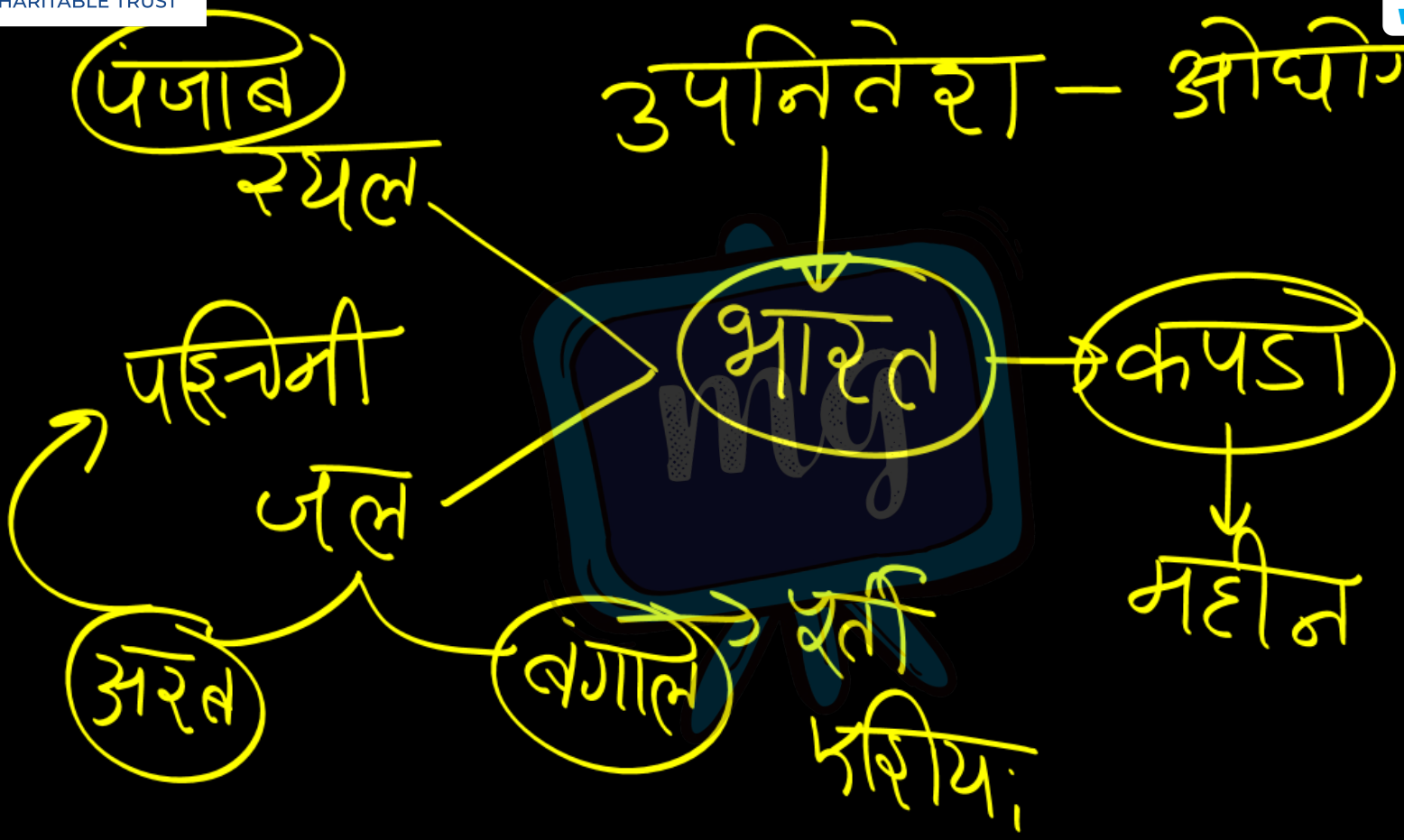

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionगyan
LET'S LEARN TOGETHER

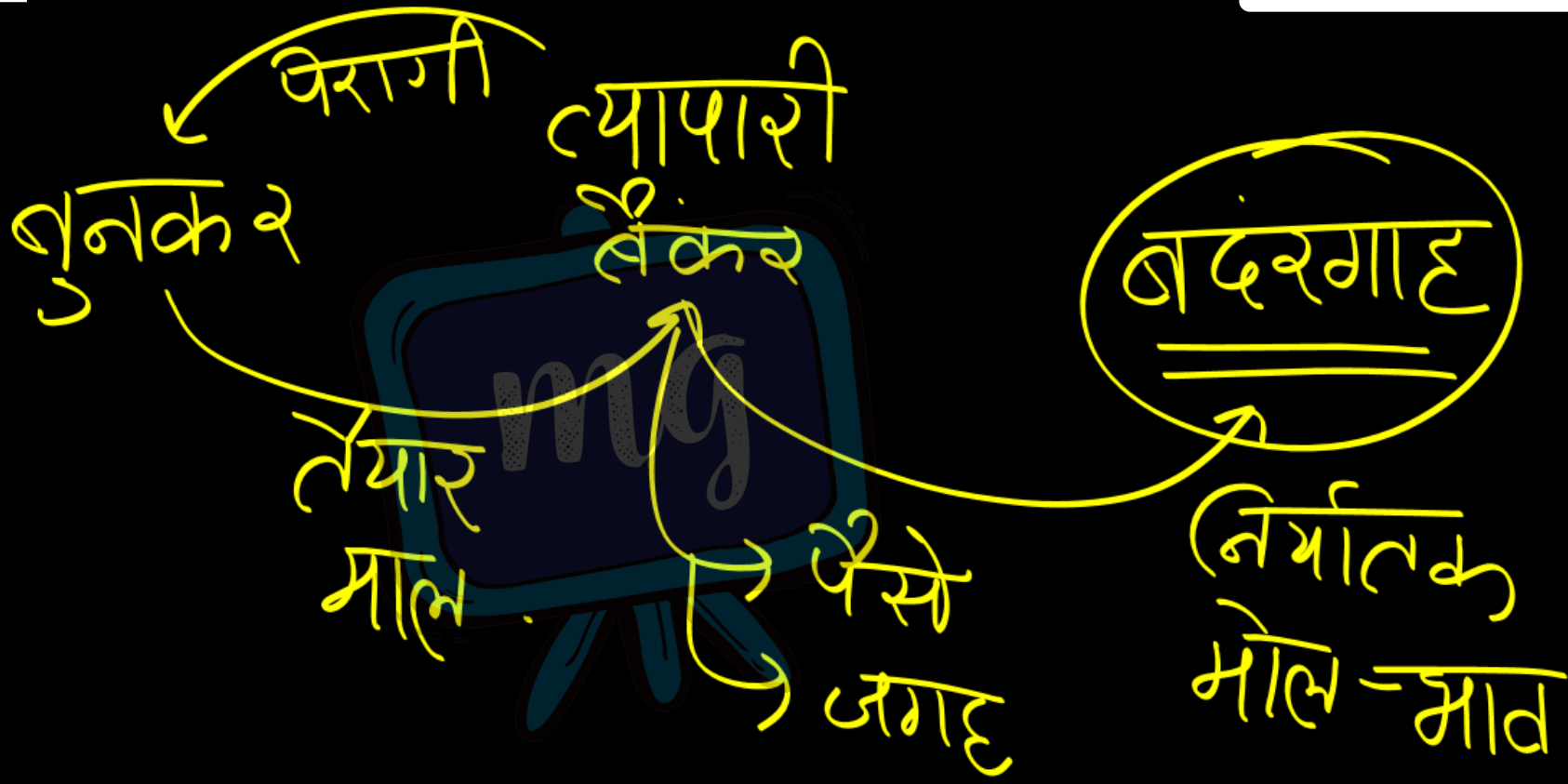

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

1790 → ↓ → ?

यूरोपीय कंपनियों का प्रवेश एवं नियंत्रण

- अब यूरोपीय कंपनियों की ताकत बढ़ती जा रही थी।
- पहले उन्होंने स्थानीय दरबारों से कई तरह की रियायतें हासिल कीं और फिर उन्होंने व्यापार पर इज़ारेदारी अधिकार प्राप्त कर लिए।
- इससे सूरत व हुगली, दोनों पुराने बंदरगाह कमज़ोर पड़ गए।
- इन बंदरगाहों से होने वाले निर्यात में नाटकीय कमी आई।
- पहले जिस कर्ज़ से व्यापार चलता था वह खत्म होने लगा।
- धीरे-धीरे स्थानीय बैंकर दिवालिया हो गए।
- 17वीं सदी के आखिरी सालों में सूरत बंदरगाह से होने वाले व्यापार का कुल मूल्य 1.6 करोड़ रुपये था। 1740 के दशक तक यह गिर कर केवल 30 लाख रुपये रह गया था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

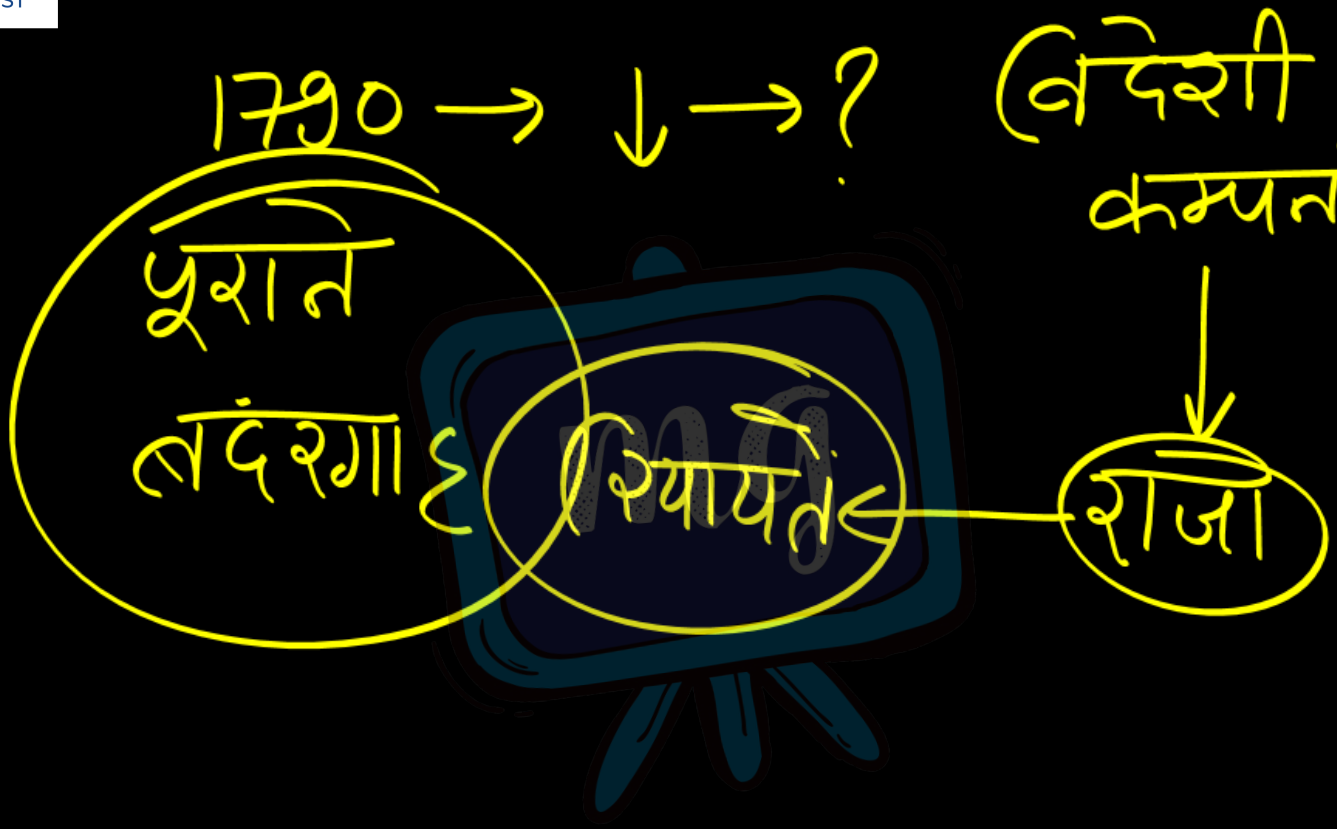

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionगyan
LET'S LEARN TOGETHER

सूरत



- पुराने बंदरगाहों की जगह नए बंदरगाहों का बढ़ता महत्त्व औपनिवेशिक सत्ता की बढ़ती ताकत का संकेत था।
- नए बंदरगाहों के ज़रिए होने वाला व्यापार यूरोपीय कंपनियों के नियंत्रण में था और यूरोपीय जहाज़ों के ज़रिए होता था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

1760 ↓

बुनकरों का क्या हुआ?

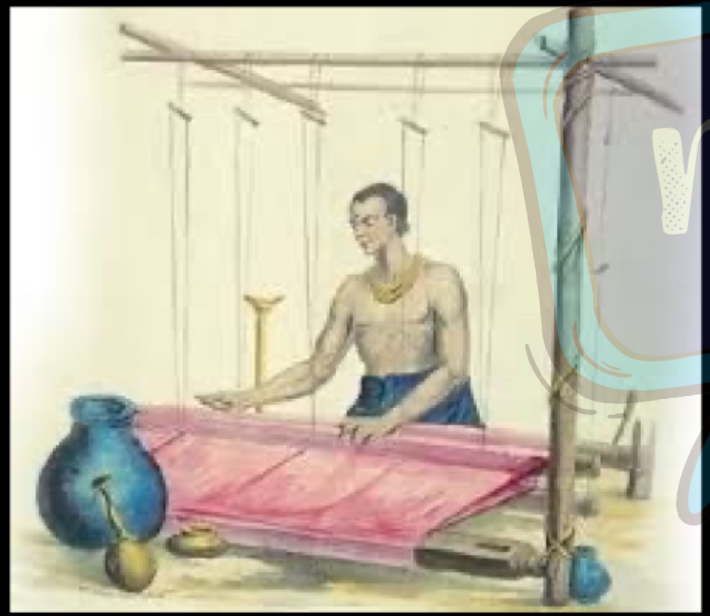

- 1760 के दशक के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी की सत्ता के सुदृढ़ीकरण की शुरुआत में भारत के कपड़ा निर्यात में गिरावट नहीं आई।
- ब्रिटिश कपास उद्योग अभी फैलना शुरू नहीं हुआ था तथा यूरोप में बारीक भारतीय कपड़ों की भारी माँग थी।
- इसलिए कंपनी भी भारत से होने वाले कपड़े के निर्यात को ही और फैलाना चाहती थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

कंपनी के लिए माल की आपूर्ति समस्या

- 1760 और 1770 के दशकों में बंगाल और कर्नाटक में राजनीतिक सत्ता स्थापित करने से पहले ईस्ट इंडिया कंपनी को निर्यात के लिए लगातार सप्लाई नहीं मिल पाती थी।
- बुने हुए कपड़े को हासिल करने के लिए फ्रांसीसी, डच और पुर्तगालियों के साथ-साथ स्थानीय व्यापारी भी होड़ में रहते थे।
- इस प्रकार बुनकरों और आपूर्ति सौदागरों के बीच खूब मोल-भाव होता था और वे अपना माल सबसे ऊँची बोली लगाने वाले खरीदार को ही बेचते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

- लंदन भेजे गए अपने पत्रों में कंपनी के अफसरों ने ऊँचे दामों तथा आपूर्ति में आने वाली मुश्किलों का बार-बार जिक्र किया है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionngyan
LET'S LEARN TOGETHER

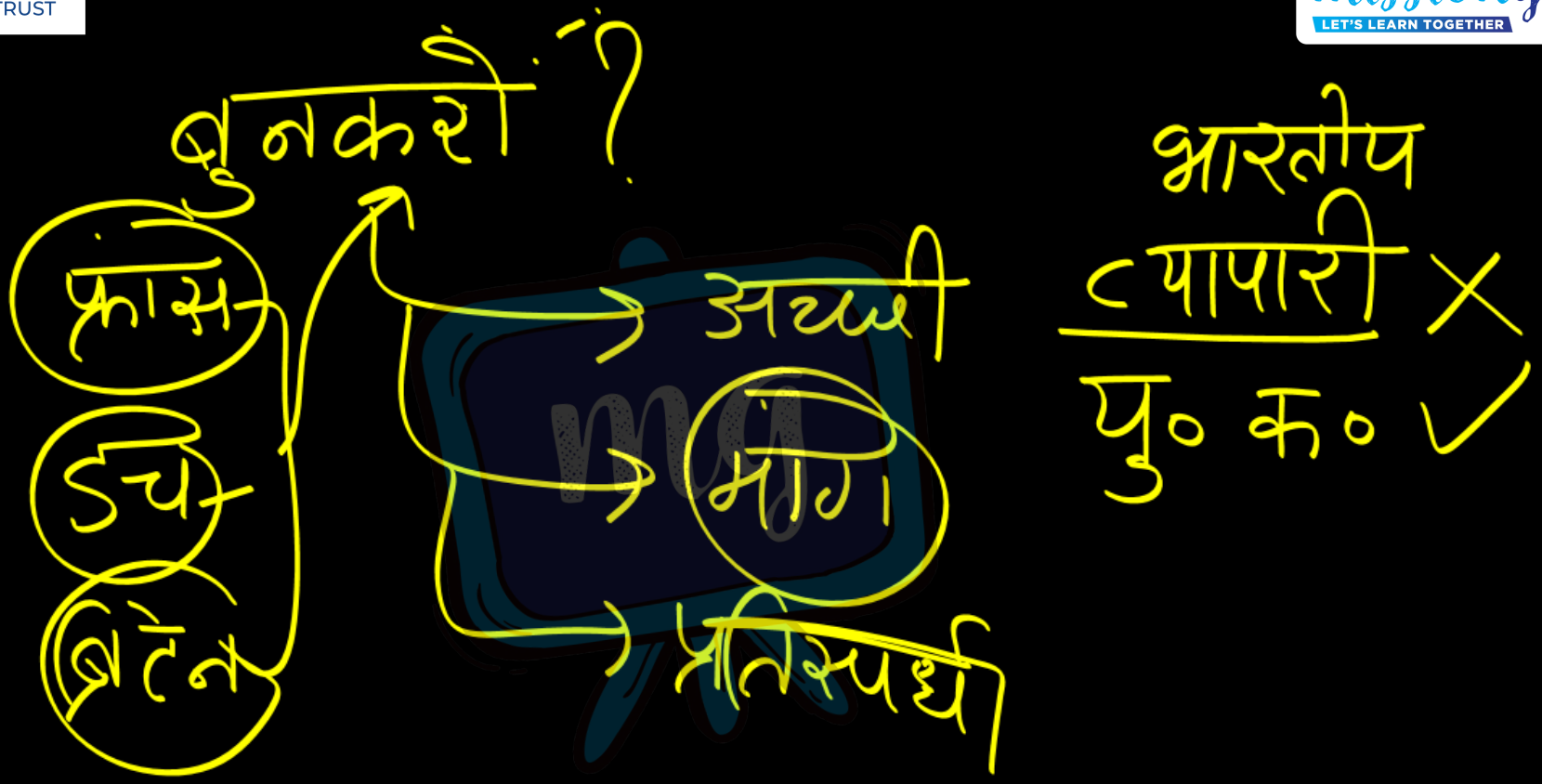

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

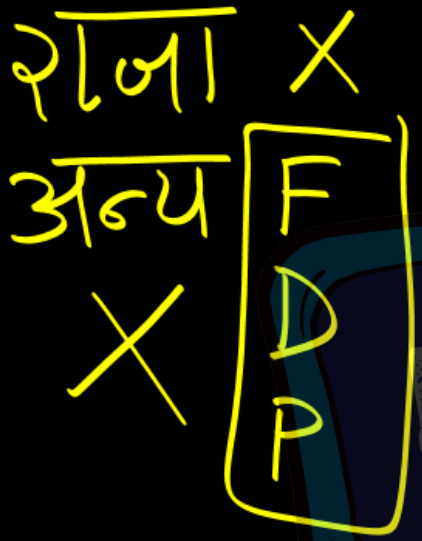

कंपनी का नियंत्रण

- एक बार ईस्ट इंडिया कंपनी की राजनीतिक सत्ता स्थापित हो जाने के बाद कंपनी ने व्यापार पर अपना एकाधिकार करना प्रारम्भ किया।
- फलस्वरूप अब कंपनी ने प्रबंधन एवं नियंत्रण व्यवस्था लागू की जिसमें–
  - (i) प्रतिस्पर्धा खत्म करने
  - (ii) लागतों पर अंकुश रखने
  - (iii) कपास व रेशम से बनी चीज़ों की नियमित आपूर्ति करने के लिए व्यवस्था की गई।
- यह काम कई चरणों में किया गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रथम चरण :-

- कंपनी ने कपड़ा व्यापार में सक्रिय व्यापारियों और दलालों को खत्म करने की कोशिश की।
- बुनकरों पर प्रत्यक्ष नियंत्रण रखने का प्रयास किया।
- कंपनी ने वेतन भोगी कर्मचारी तैनात कर दिये जिनका कार्य :-

(i) बुनकरों पर निगरानी रखना
(ii) माल इकट्ठा करना
(iii) कपड़ों की गुणवत्ता जाँचना।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionगyan
LET'S LEARN TOGETHER



दूसरा चरण :-

- कंपनी को माल बेचने वाले बुनकरों को अन्य खरीदारों को माल बेचने पर पाबंदी लगा दी गई।
- इसके लिए उन्हें पेशगी रक़म दी जाती थी।
- एक बार काम का ऑर्डर मिलने पर बुनकरों को कच्चा माल खरीदने के लिए कर्ज़ा दे दिया जाता था।
- जो कर्ज़ा लेते थे उन्हें अपना बनाया हुआ कपड़ा गुमाश्ता को ही देना पड़ता था। किसी और व्यापारी को नहीं बेच सकते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

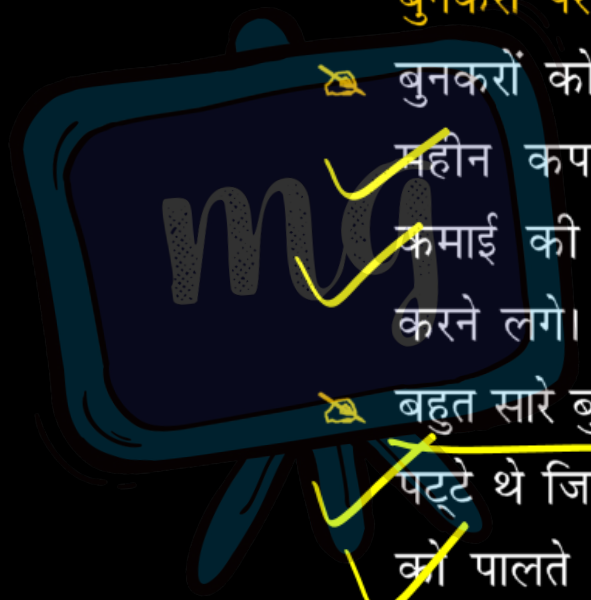

बुनकरों पर प्रभाव :-

- बुनकरों को जैसे-जैसे क़र्ज़े मिलते गए और महीन कपड़े की माँग बढ़ने लगी, ज़्यादा कमाई की आस में बुनकर पेशगी स्वीकार करने लगे।
- बहुत सारे बुनकरों के पास जमीन के छोटे-छोटे पट्टे थे जिन पर वे खेती करके अपने परिवार को पालते थे।
- अब वे इस जमीन को भाड़े पर देकर पूरा समय बुनकरी में लगाने लगे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER



बुनकरों व गुमाश्तों के बीच टकराव :-

- जल्दी ही गाँवों से बुनकरों और गुमाश्तों के बीच टकराव की खबरें आने लगीं।
- इससे पहले आपूर्ति सौदागर इन बुनकरों के गाँवों में ही रहते थे और बुनकरों से उनके नज़दीकी ताल्लुकात होते थे।
- वे बुनकरों की ज़रूरतों का खयाल रखते थे और संकट के समय उनकी मदद करते थे।
- नए गुमाश्ता बाहर के लोग थे।

- उनका गाँवों से पुराना सामाजिक संबंध नहीं था।
- वे दंभपूर्ण व्यवहार करते थे, सिपाहियों व चपरासियों को लेकर आते थे और माल समय पर तैयार न होने की स्थिति में बुनकरों को सज़ा देते थे।
- सज़ा के तौर पर बुनकरों को अकसर पीटा जाता था और कोड़े बरसाए जाते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

- अब बुनकर न तो दाम पर मोलभाव कर सकते थे और न ही किसी और को माल बेच सकते थे।
- उन्हें कंपनी से जो कीमत मिलती थी वह बहुत कम थी पर वे कर्जों की वजह से कंपनी से बँधे थे।
- कर्नाटक और बंगाल में बहुत सारे बुनकर गाँव छोड़ कर चले गए।
- वे अपने रिश्तेदारों के यहाँ किसी और गाँव में करघा लगा लेते थे।
- कई स्थानों पर कंपनी और उसके अफसरों का विरोध करते हुए गाँव के व्यापारियों के साथ मिलकर बुनकरों ने बगावत कर दी।
- कुछ समय बाद बहुत सारे बुनकर कर्ज़ा लौटाने से इनकार करने लगे।
- उन्होंने करघे बंद कर दिए और खेतों में मज़दूरी करने लगे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

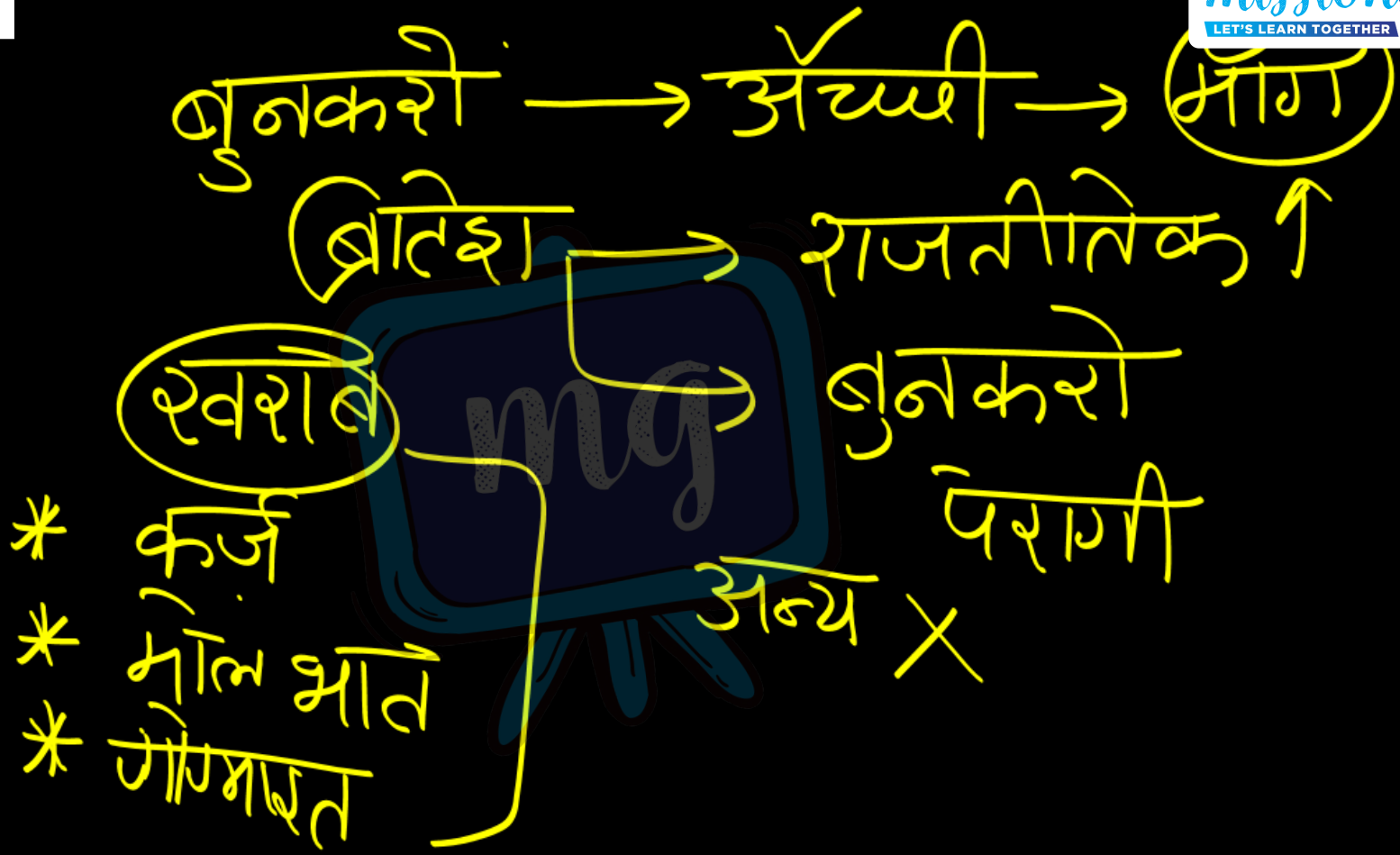

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

७. कम्पनी के आने भारतीय बुनकरों पर क्या प्रभाव पड़ा?



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missionGyan
LET'S LEARN TOGETHER

भारत में मैनचेस्टर का आना

- 19वीं सदी के प्रारंभ से ही भारत के कपास-बुनकरों के सामने नई समस्याएँ पैदा हो गईं।
- 1772 में ईस्ट इंडिया कंपनी के अफसर हेनरी पतूलो ने कहा था कि भारतीय कपड़े की माँग कभी कम नहीं हो सकती क्योंकि दुनिया के किसी और देश में इतना अच्छा माल नहीं बनता।
- लेकिन 19वीं सदी की शुरूआत में भारत के कपड़ा निर्यात में गिरावट आने लगी जो लंबे समय तक जारी रही।
- 1811-12 में सूती माल का हिस्सा कुल निर्यात में 33 प्रतिशत था जो 1850-51 में यह मात्र 3 प्रतिशत ही रह गया था।